शब्दावली

निरपेक्ष सीमा (Absolute threshold) : किसी उद्दीपक के पता लगने की आवश्यक न्यूनतम तीव्रता।

समंजन (Accommodation) : लेंस की आकृति को बदलने के लिए पक्ष्माभिकी पेशी की चाक्षुष क्रिया।

परसंस्कृतिग्रहण (Acculturation) : दो भिन्न सांस्कृतिक समूहों में प्रथम एवं सतत संपर्क के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन।

उपलब्धि की आवश्यकता (Achievement need) : सफल होना, अग्रगण्य होना, दूसरों से अच्छा कार्य निष्पादन करने की आवश्यकता, ऐसे चुनौतीपूर्ण कार्यों को करना जो व्यक्ति की योग्यता का प्रदर्शन करें।

तीक्ष्णता (Acuity) : दृष्टि की तीक्ष्णता।

किशोरावस्था (Adolescence) : बाल्यावस्था से वयस्क होने के पहले की विकासात्मक अवधि, जो कि लगभग 10-12 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होकर 18 से 22 वर्ष की उम्र तक विस्तृत है।

एड्रिनलीन (Adrenaline) : मानव शरीर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हार्मोन जो किसी को लड़ने, भागने या भयभीत होने की प्रतिक्रिया के लिए तैयार करता है।

एड्रीनोकॉर्टिकोट्रोफिक हार्मोन (Adrenocorticotrophic hormone - ACTH) : अग्रपीयूष ग्रंथि द्वारा स्रावित एक हार्मोन जो एड्रिनल को उद्दीप्त करता है कि वह अपना कॉर्टिकोयड हार्मोन स्रावित करे।

आकाशी परिप्रेक्ष्य (Aerial perspective) : गहराई के प्रत्यक्षीकरण के लिए एक एकनेत्री संकेत, जो विभिन्न वायुमंडलीय परिस्थितियों के अंतर्गत वस्तुओं की सापेक्षिक स्पष्टता को व्यक्त करता है। निकट की वस्तुएँ सामान्यत: सूक्ष्म विशेषताओं के साथ अधिक स्पष्ट होती हैं, जबकि दूर की वस्तुएँ कम स्पष्ट होती हैं।

अभिवाही तंत्रिका कोशिका (Afferent neuron) : सूचना भेजने की प्रक्रिया में लगी हुई तंत्रिका कोशिकाएँ।

उत्तर प्रतिमा (After image) : वह बिंब जो किसी उद्दीपन के खत्म हो जाने या दूर हो जाने के बाद भी बना रहता है।

पूर्ण या शून्य नियम (All-or-none law) : इस नियम के अनुसार एक तंत्रिका कोशिका किसी उद्दीपन के प्रति या तो अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रतिक्रिया करेगी अथवा बिलकुल ही प्रतिक्रिया नहीं करेगी, भले ही उद्दीपन की मात्रा कितनी भी तीव्र क्यों न हो।

आयाम (Amplitude) : ध्वनि तरंगों में, आधार रेखा से प्रत्येक सिंसिसॉयडल तरंग के शीर्ष तक की दूरी। ई.ई.जी. मापन में, ई.ई.जी. अभिलेख (रिकॉर्ड) में अधिकतम और न्यूनतम वोल्टेज से दूरी। प्रत्येक मामले में सामान्यत: तीव्रता के माप के रूप में इसका उपयोग होता है।

गलतुंडिका (Amygdala) : बादाम के आकार के दो तंत्रिका गुच्छ जो उपवल्कुटीय तंत्र के घटक हैं तथा संवेगों से जुड़े होते हैं।

जीववाद (Animism) : पूर्व-संक्रियात्मक चिंतन का एक पक्ष या विश्वास कि निर्जीव वस्तुओं में 'जीवन जैसे' गुण होते हैं और वे कार्य करने में सक्षम हैं।

दुश्चिंता (Anxiety) : पूर्वकथनीय शरीरक्रियात्मक परिवर्तनों के साथ आशंका अथवा भय की सामान्य अनुभूति।

उपागम-उपागम द्वंद्व (Approach-approach conflict) : दो समान प्रिय या इच्छित लक्ष्यों के बीच चयन का द्वंद्व।

उपागम-परिहार द्वंद्व (Approach-avoidance conflict) : किसी स्थिति के कारण उत्पन्न द्वंद्व जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्ष हैं। वह व्यक्ति, जो समान लक्ष्य द्वारा विकर्षित एवं आकर्षित है, दुविधा की अनुभूति का प्रदर्शन करता है।

भाव प्रबोधन या उद्वेलन (Arousal) : उद्वेलन शरीर की क्रियात्मक अवस्था है।

कृत्रिम बुद्धि (Artificial intelligence - AI) : यह क्षेत्र मशीनों की निर्मिति (जैसे- कंप्यूटर) से संबद्ध है, जो कि जटिल काम कर सकती हैं, जिसके लिए पहले मानव बुद्धि की आवश्यकता समझी जाती थी।

2019-20

सहचारी अधिगम (Associative learning) : ऐसा अधिगम जिसमें कुछ घटनाएँ साथ-साथ घटित होती हैं। ये घटनाएँ दो उद्दीपक हो सकती हैं (जैसा कि प्राचीन अनुबंधन में) या एक अनुक्रिया और उसका परिणाम (जैसाकि क्रियाप्रसूत अनुबंधन में) हो सकती हैं।

आसक्ति (Attachment) : शिशु और माता-पिता अथवा परिचर्या करने वाले के बीच एक गहन संवेगात्मक बंधन।

गुणारोपण (Attribution) : बाह्य कारकों (संकेतों) के प्रत्यक्षण के आधार पर किसी व्यक्ति की आंतरिक स्थिति के बारे में अनुमान।

प्राधिकारिक संततिपालन (Authoritative parenting) : बच्चों के पालन-पोषण की एक शैली, जिसमें माता-पिता बच्चे को स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं लेकिन उनके कार्यों की सीमा रेखा तय करते हैं एवं उन पर नियंत्रण रखते हैं।

स्वायत्त तंत्रिका तंत्र (Autonomic nervous system) : परिधीय तंत्रिका तंत्र का एक भाग जो कुछ चिकनी ग्रंथियों अर्थात अंगों एवं ग्रंथियों की क्रियाओं में मदद करता है; जिसमें अनुकंपी और परानुकंपी तंत्रिका तंत्र शामिल हैं जो संवेगात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

परिहार-परिहार द्वंद्व (Avoidance-avoidance conflict) : दो समान अवांछनीय अथवा भयोत्पादक लक्ष्यों के बीच द्वंद्व; प्राय: इसका समाधान नहीं हो पाता है।

अक्षतंतु (Axon) : तंत्रिका कोशिका का वह भाग जो काय कोशिका से दूसरी कोशिकाओं तक सूचनाएँ ले जाता है।

मूल संवेग (Basic emotions) : भाव अवस्थाएँ जो मनुष्य जाति में सामान्य हैं, जिनसे अन्य भाव अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं।

व्यवहार आनुवंशिकी (Behaviour genetics) : व्यवहार पर आनुवंशिक और पारिस्थितिक प्रभावों की शक्ति और सीमाओं का अध्ययन।

व्यवहार (Behaviour) : कोई भी प्रकट क्रिया/प्रतिक्रिया जो मनुष्य या जानवर करता है तथा जिसका किसी प्रकार प्रेक्षण किया जा सकता हो।

व्यवहारवाद (Behaviourism): एक विचारधारा जो वस्तुनिष्ठता, प्रेक्षणीय व्यवहारात्मक अनुक्रियाओं, पर्यावरणी निर्धारकों और सीखने पर बल देती है।

द्विभाषिकता (Bilingualism) : दो भाषाओं को सीखना जिसमें भिन्न वाक्-स्वन, शब्दावली एवं व्याकरणिक नियम हों।

द्विनेत्री संकेत (Binocular cues) : गहराई के संकेत, जैसे कि दृष्टिपटलीय विषमता और अभिसरण, जो दो आँखों के उपयोग पर निर्भर करते हैं।

जैवप्रतिप्राप्ति (Biofeedback **):** एक ऐसी प्रविधि जिससे व्यक्ति अपनी शरीरक्रियात्मक प्रक्रियाओं का जिनके प्रति वह सामान्यत: अनभिज्ञ रहता है परिवीक्षण कर सके (जैसे, हृदयगति, रक्तचाप इत्यादि) तथा उन्हें नियंत्रित करना सीख सके।

अंध बिंदु (Blind spot) : वह बिंदु, जहाँ दृष्टि स्नायु आँख से बाहर जाती है और एक 'अंध' बिंदु निर्मित करती है क्योंकि वहाँ कोई संग्राहक कोशिकाएँ नहीं होतीं।

ऊर्ध्वगामी प्रक्रमण (Bottom-up processing) : आकृति प्रत्यक्षण में अंश से पूर्ण की ओर प्रगति।

मस्तिष्क स्तंभ (Brainstem) : मस्तिष्क का सबसे पुराना भाग और केंद्रीय आंतरिक हिस्सा, यह वहाँ से प्रारंभ होता है जहाँ मेरुरज्जु खोपड़ी में प्रवेश करते समय फूल जाती है; यह स्वचालित जीवनरक्षक क्रियाओं के लिए उत्तरदायी है।

विचारावेश (Brainstorming) : समस्या समाधान युक्ति जिसमें व्यक्ति या समूह समस्त संभावित विचारों को एकत्र करते हैं और तभी मूल्यांकन करते हैं जब सारे विचार एकत्र कर लिए गए हों।

द्युति (Brightness) : प्रकाश की तीव्रता अथवा तरंग-आयाम के साथ संबंधित मनोवैज्ञानिक अनुभव।

कैनन-बार्ड सिद्धांत (Cannon-Bard theory) : संवेग का एक सिद्धांत जिसके अनुसार शारीरिक परिवर्तन तथा संवेग की अनुभूति एक साथ घटित होती है।

व्यक्ति अध्ययन (Case study) : एक तकनीक जिसमें एक व्यक्ति का गहन अध्ययन किया जाता है।

कोशिका (Cell) : किसी जीवित प्राणी की आधारभूत इकाई।

केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central nervous system-CNS) : तंत्रिका तंत्र का उपतंत्र, जो मस्तिष्क और मेरुरज्जु से बना होता है।

केंद्रीकरण (Centration) :दूसरी सभी विशेषताओं को छोड़कर एक विशेषता पर ध्यान केंद्रित करना।

2019-20

शिरःपदाभिमुख संरूप (Cephalocaudal pattern) : वह क्रम, जिसमें सबसे अधिक विकास शीर्ष पर होता है। आकार, वजन और रूप में शारीरिक वृद्धि के साथ विभेदन क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर होता है।

अनुमस्तिष्क (Cerebellum) : खोपड़ी के निचले स्तर या आधार पर स्थित मस्तिष्क की संरचना, जो शारीरिक गति, स्थिति और संतुलन को व्यवस्थित करती है।

प्रमस्तिष्कीय वल्कुट (Cerebral cortex) : मस्तिष्क का वह हिस्सा जो मस्तिष्क के उच्चतर संज्ञानात्मक और संवेगात्मक कार्यों का नियमन करता है।

प्रमस्तिष्कीय गोलार्द्ध (Cerebral hemispheres) : प्रमस्तिष्कीय वल्कुट के दो लगभग समरूप आधे भाग।

गुणसूत्र (Chromosomes) : तंतुवत संरचनाएँ जो 23 जोड़ों में होती हैं, प्रत्येक जोड़े का एक सदस्य माता या पिता से आता है। गुणसूत्र में उल्लेखनीय आनुवंशिक पदार्थ डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (डी.एन.ए.) होता है।

कालानुक्रमिक आयु (Chronological age) : उन वर्षों की संख्या जो किसी व्यक्ति के जन्म के बाद से लेकर गणना के समय तक गुजर गए; जिसका सामान्यतः 'उम्र' से तात्पर्य होता है।

खंडीयन (Chunking) : परिचित उद्दीपकों के समूह को एक इकाई के रूप में संचित करना।

प्राचीन अनुबंधन (Classical conditioning) : अधिगम का एक प्रकार जिसमें कोई जीव उद्दीपकों को संबद्ध करना सीखता है। इसमें मुख्य लक्षण यह है कि मूलभूत रूप से तटस्थ लेकिन अनुबंधित उद्दीपक (CS) अननुबंधित उद्दीपक (US) के साथ बार-बार युग्मित किए जाने पर वही अनुक्रिया अर्जित कर लेता है जो किसी भी अननुबंधित उद्दीपक के लिए की जाती है।

संवरण (Closure) : संगठनात्मक प्रक्रिया जो कि अपूर्ण आकृतियों का पूर्ण के रूप में प्रत्यक्षण कराती है।

कर्णावर्त (Cochlea) : अंतर्कर्ण में द्रव्य से भरी कुंडलित सुरंग जिसमें सुनने के ग्राहक होते हैं।

संज्ञान (Cognition) : जानने के साथ जुड़ी सभी मानसिक प्रक्रियाएँ, यथा-प्रत्यक्षण करना, चिंतन करना और याद करना इत्यादि। यह सूचना के प्रक्रमण, समझ एवं संप्रेषण से संबंधित है।

संज्ञानात्मक उपागम (Cognitive approach) : वह दृष्टिकोण जो कि मानव चिंतन और जानने की सभी प्रक्रियाओं को मनोविज्ञान के अध्ययन के केंद्र में रखने पर बल देता है।

संज्ञानात्मक लाघव (Cognitive economy) : संप्रत्ययों के श्रेणीबद्ध संगठन द्वारा दीर्घकालिक स्मृति का अधिकाधिक एवं प्रभावकारी उपयोग बताने के लिए एक पारिभाषिक शब्द।

संज्ञानात्मक अधिगम (Cognitive learning) : वैसा अधिगम जिसमें प्रत्यक्षण, ज्ञान एवं विचार की पुनर्व्यवस्था अंतर्निहित होती है।

संज्ञानात्मक मानचित्र (Cognitive map) : एक व्यक्ति के परिवेश की रूपरेखा का मानसिक प्रतिरूप। उदाहरणार्थ, एक भूल-भुलैया की खोजबीन के बाद चूहे इस तरह व्यवहार करते हैं मानो उन्होंने उसका संज्ञानात्मक मानचित्र सीख लिया हो।

संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (Cognitive processes) : व्यक्ति के चिंतन, बुद्धि और भाषा को संलग्न करने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ।

वर्णांधता (Colour blindness) : रंगों का प्रत्यक्षण कर पाने में कुछ मात्रा में अक्षमता।

वर्ण स्थैर्य (Colour constancy) : किसी सुपरिचित वस्तु को उसके उसी एक रंग में ही देख पाने की प्रवृत्ति, भले ही प्रकाश में परिवर्तन होने से उसका वास्तविक रंग बदल गया हो।

संप्रत्यय (Concept) : विचारों, वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा अनुभवों की एक सामान्य श्रेणी जिसके सदस्यों में कुछ समान गुण विद्यमान होते हैं।

मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete operational stage) : पियाजे की तीसरी अवस्था जो लगभग 7-11 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में बच्चे तार्किक संक्रियाएँ तथा मूर्त उदाहरणों में तर्कना कर सकते हैं किंतु अमूर्त वस्तुओं पर विचार नहीं कर पाते।

अनुबंधित अनुक्रिया (Conditioned response-CR) : प्राचीन अनुबंधन में एक अनुबंधित उद्दीपक के प्रति सीखी गई या अर्जित अनुक्रिया।

अनुबंधित उद्दीपक (Conditioned stimulus-CS) : एक तटस्थ उद्दीपक, अननुबंधित उद्दीपक के साथ बार-बार के साहचर्य से, अनुबंधित अनुक्रिया प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

अनुबंधन (Conditioning) : एक व्यवस्थित प्रक्रिया जिसके माध्यम से उद्दीपक के प्रति नयी अनुक्रियाएँ सीखी जाती हैं।

शंकु या कोन (Cones) : विशिष्ट चाक्षुष ग्राहक जो दिन के प्रकाश की दृष्टि एवं रंग दृष्टि में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

गोपनीयता (Confidentiality) : शोधकर्ता जो भी प्रदत्त एकत्रित करते हैं उसे पूर्ण रूप से गोपनीय रखने के लिए उत्तरदायी होते हैं।

द्वंद्व (Conflict) : अभिप्रेरकों, अंतर्नोदों, आवश्यकताओं अथवा लक्ष्यों के परस्पर विरोध के फलस्वरूप पैदा हुई विक्षोभ या तनाव की स्थिति।

मिश्रण (Confounding) : किसी प्रयोग में परिवर्त्यों की उन क्रियाओं को व्यक्त करने के लिए एक पारिभाषिक शब्द, जो प्राप्त प्रदत्त की व्याख्या को एक दूसरे में मिला देते हैं या गड़बड़ कर देते हैं। यदि अनाश्रित परिवर्त्य किसी संबंधित किंतु अनियंत्रित परिवर्त्य से मिल जाता है तो प्रयोगकर्ता आश्रित परिवर्त्य के मापन में दोनों परिवर्त्यों के प्रभाव को अलग नहीं कर सकता।

चेतना (Consciousness) : अपने मानस की सामान्य स्थिति से अवगत रहना, विशेष मानसिक विषयवस्तु की जानकारी अथवा स्वयं अपने अस्तित्व के बारे में अवगत रहना।

संरक्षण (Conservation) : बाह्य परिवर्तनों के बावजूद स्थितियों अथवा वस्तुओं के कुछ गुणों में स्थायित्व या अपरिवर्तनीयता का विश्वास।

विषय विश्लेषण (Content analysis) : गुणात्मक प्रदत्त में आए हुए विशिष्ट विचारों, संप्रत्ययों और शब्दों तथा उनके संबंधों का विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त विधि।

नियंत्रित समूह (Control group) : किसी अध्ययन में वे प्रयोज्य जिन्हें वह विशिष्ट व्यवहार नहीं दिया जाता जो प्रायोगिक समूह को दिया जाता है।

नियंत्रित प्रक्रियाएँ (Control processes) : वे युक्तियाँ जो भंडारण के एक तंत्र से दूसरे तंत्र में सूचना के अंतरण को नियंत्रित करती हैं।

अभिसारी चिंतन (Convergent thinking) : ऐसा चिंतन जो समस्या के एक सही समाधान की ओर निर्देशित होता है।

महासंयोजक पिंड (Corpus callosum) : तंत्रिका तंतुओं का एक बंडल जो दो गोलार्द्धों को जोड़ता है और उनके मध्य संदेश का आदान-प्रदान करता है।

सहसंबंधात्मक अनुसंधान (Correlational research) : दो या दो से अधिक घटनाओं, विशेषताओं या परिवर्त्यों के मध्य संबंध की शक्ति बताने के उद्देश्य से किया गया शोध।

वल्कुट (Cortex) : प्रमस्तिष्क का धूसर, पतला, माइलिन आवरण।

सर्जनात्मकता (Creativity) : अभिनव और असाधारण तरीके से सोचने की योग्यता और समस्याओं को अनन्य ढंग से हल करना।

संस्कृति (Culture) : एक समुदाय में व्यापक रूप से सहभाजित रीति-रिवाज़, विश्वास, मूल्य, मानक, संगठन एवं अन्य उत्पाद जो पीढ़ियों में सामाजिक रूप से संचारित होते हैं।

तम-व्यनुकूलन (Dark adaptation) : वह प्रक्रिया जिसमें आँखें कम प्रकाश में रोशनी के लिए संवेदनशील हो जाती हैं।

प्रदत्त या आँकड़ा (Data) : मानसिक प्रक्रियाओं एवं व्यवहार से संबंधित तथा लोगों से प्राप्त गुणात्मक एवं मात्रात्मक सूचनाएँ।

स्पष्टीकरण या खुलासा करना (Debriefing) : प्रयोग के सफलतापूर्वक संपन्न हो जाने के पश्चात प्रतिभागी को वास्तविक प्रयोजन के बारे में बताने की विधि। इसकी विशेष रूप से तब ज़रूरत पड़ती है जब प्रतिभागी प्रयोग के दौरान बुरी तरह भ्रमित हो।

निर्णयन (Decision-making) : विकल्पों के मूल्यांकन एवं उनमें से चुनाव करने की प्रक्रिया।

निगमनात्मक तर्कना (Deductive reasoning) : किसी तर्क की आधारिका को स्वीकार कर एक निष्कर्ष तक पहुँचना और फिर औपचारिक तार्किक नियमों का अनुसरण करना।

डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (Deoxyribonuclic acid - DNA) : कोशिका का आनुवंशिक पदार्थ, जो केंद्रक में स्थित होता है।

आश्रित परिवर्त्य (Dependent variable) : किसी प्रयोग में जिस कारक का मापन किया जाता है; जो अनाश्रित परिवर्त्य के परिचालन के कारण परिवर्तित हो जाता है।

गहनता प्रत्यक्षण (Depth perception) : प्रेक्षक से किसी वस्तु की दूरी का प्रत्यक्षण या किसी ठोस वस्तु के सामने से पीछे की दूरी।

विकास (Development) : प्रगामी, क्रमिक एवं पूर्वकथनीय परिवर्तन का संरूप जो गर्भधारण के साथ प्रारंभ होता है और पूरे जीवन-विस्तृति के दौरान जारी रहता है।

भेद सीमा (Difference threshold) : उद्दीपक के जोड़े में वह न्यूनतम अंतर जिसका प्रत्यक्षण हो सके।

विभेदन (Discrimination) : प्राचीन अनुबंधन में एक अनुबंधित और अन्य दूसरे उद्दीपक जो किसी अननुबंधित उद्दीपक का संकेत नहीं देते, इनके बीच विभेद करने की क्षमता। क्रियाप्रसूत अनुबंधन में उद्दीपकों के प्रति अलग ढंग से अनुक्रिया करना जो यह संकेत भेजता है कि कोई व्यवहार प्रबलित होगा या नहीं प्रबलित होगा।

अपसारी चिंतन (Divergent thinking) : ऐसा चिंतन जो मौलिक, आविष्कारशील और लचीला है। ऐसे प्रश्न जिनके कई उत्तर हो सकते हैं, उन सभी प्रकार के उत्तरों को खोजने के लिए विभिन्न दिशाओं में चिंतन उन्मुख होता है और जो सर्जनात्मकता की विशेषता है।

विभक्त अवधान (Divided attention) : ऐसी प्रक्रिया जिसमें अवधान दो या अधिक उद्दीपकों के समुच्चय के मध्य विभक्त होता है।

द्वि-संकेतन सिद्धांत (Dual-coding theory) : पैवियो के सिद्धांत के अनुसार आर्थी और चाक्षुष संकेतों से स्मृति बढ़ती है, क्योंकि इनमें से कोई भी प्रत्याह्वान करा सकता है।

पठनवैकल्य (Dyslexia) : पढ़ने में होने वाली कठिनाई को व्यक्त करने के लिए एक पारिभाषिक शब्द।

प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति (Echoic memory) : ध्वन्यात्मक उद्दीपकों की क्षणिक संवेदी स्मृति; यदि अवधान कहीं और है तो भी 3 या 4 सेकंड के अंदर ध्वनि या शब्द का प्रत्याह्वान किया जा सकता है।

अपवाही तंत्रिका कोशिका (Efferent neurons) : यह तंत्रिका तंत्र के आवेग को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से दूर तक भेजते हैं तथा मांसपेशियों और ग्रंथियों की प्रभावक इकाई की ओर भेजते हैं।

अंहकेंद्रवाद (Egocentrism) : पूर्व-संक्रियात्मक चिंतन की एक प्रमुख विशेषता जो किसी व्यक्ति द्वारा अपने परिप्रेक्ष्य और किसी दूसरे के परिप्रेक्ष्य के बीच भेद न कर पाने की अयोग्यता की ओर संकेत करती है।

विस्तृत पूर्वाभ्यास (Elaborative rehearsals) : अल्पकालिक स्मृति में नयी सूचनाओं को दीर्घकालिक स्मृति में संचित परिचित सामग्री से जोड़ना।

संवेग (Emotion) : ऐसी स्थितियाँ जो व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण समझी जाती हैं, उनके प्रति अनुक्रियाओं में परिवर्तनों का एक जटिल प्रारूप, जिसमें शारीरिक उत्तेजन, अनुभूति, विचार और व्यवहार सम्मिलित होते हैं।

सांवेगिक बुद्धि (Emotional intelligence) : ऐसे कौशलों का समुच्चय जो संवेगों के सही आकलन, मूल्यांकन, अभिव्यक्ति और नियमन के आधार होते हैं।

मस्तिष्कीकरण (Encephalisation) : जैव उद्‌विकास संबंधी विकास के दौरान तंत्रिका तंत्र के व्यापक विस्तार की प्रवृत्ति जो जीव (प्राणी) के शीर्ष सिरे की ओर होती है।

कूट संकेतन (Encoding) : स्मृति तंत्र में पहली बार आने वाली सूचनाओं का अभिलेखन करने की प्रक्रिया।

अंत:स्रावी ग्रंथियाँ (Endocrine glands) : वे ग्रंथियाँ जो अपने हार्मोन सीधे रक्त प्रवाह में स्रावित करती हैं।

पर्यावरण या परिवेश (Environment) : भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाह्य स्थिति का कुल योग जो प्राणी के कार्यों को प्रभावित करता है।

घटनापरक स्मृति (Episodic memory) : एक प्रकार की दीर्घकालिक स्मृति जो आत्मगत या निजी सूचनाएँ धारण करती है और जिसे विगत घटनाओं के लिए विशेष कालावधि में संदर्भ हेतु कोड किया जाता है।

सम्मान संबंधी आवश्यकताएँ (Esteem needs) : मैस्लो के सिद्धांत में प्रतिष्ठा, सफलता और आत्म-सम्मान की आवश्यकताएँ। आत्मीयता और प्रेम संबंधी आवश्यकताओं के तुष्ट होने के बाद इन्हें पूरा किया जा सकता है।

क्रमविकास (Evolution) : चार्ल्स डार्विन द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत जिसके अनुसार समय क्रम में प्राणी उत्पन्न होते हैं और अपने विशिष्ट पर्यावरण की अनुकूलन आवश्यकताओं के अनुसार ढल जाते हैं।

प्रयोग (Experiment) : चुने हुए परिवर्त्यों के मध्य कारण संबंध की जाँच के लिए नियंत्रित परिस्थितियों के अंतर्गत किए गए प्रेक्षणों की एक शृंखला।

प्रायोगिक समूह (Experimental group) : किसी प्रयोग में प्रयोज्यों का वह समूह जो अनाश्रित परिवर्त्य के संदर्भ में कोई विशेष व्यवहार प्राप्त करता है।

सुव्यक्त स्मृति (Explicit memory) : तथ्यों और अनुभवों की स्मृति जिसे कोई चेतन रूप से जानता है और उसे घोषित कर सकता है (इसे घोषणात्मक स्मृति भी कह सकते हैं)।

विलोप (Extinction) : किसी अनुबंधित अनुक्रिया का ह्रास; यह प्राचीन अनुबंधन में होता है, जब कोई अननुबंधित उद्दीपक किसी अनुबंधित उद्दीपक का अनुसरण नहीं करता; क्रियाप्रसूत अनुबंधन में तब होता है जब कोई अनुक्रिया प्रबलित नहीं रहती है।

प्रतिप्राप्ति (Feedback) : किसी सीखने के काम के निष्पादन सबंधी सूचना, इसे परिणामों का ज्ञान भी कहते हैं।

क्षेत्र प्रयोग (Field experiment) : वास्तविक दुनिया के वातावरण में किया गया प्रयोग जिसमें परिवर्त्यों को किसी तरह संचालित किया जाता है और उनके प्रति प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है।

संघर्ष अथवा पलायन संलक्षण (Fight or flight syndrome) : यह किसी दबाव के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति दबाव के विरुद्ध लड़कर अथवा दबावमय उद्दीपक से पलायन कर उद्दीपक के प्रति प्रतिक्रिया करता है।

सूक्ष्म पेशीय कौशल (Fine motor skills) : पेशीय कौशल वे हैं जो अधिक सूक्ष्म गतियों से संबंधित हैं, जैसे – अंगुलियों का कौशल।

औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal operational stage) : पियाजे की चौथी अवस्था जिसमें व्यक्ति वास्तविक कार्य के स्तर पर अनुभवों के संसार से परे जाता है और सूक्ष्म तथा अधिक तार्किक ढंग से सोचता है।

मुक्त पुनःस्मरण (Free recall) : स्मृति के प्रयोगों में प्रतिभागी द्वारा संचित पदों का किसी भी क्रम में पुनरुद्धार।

ललाट पालि (Frontal lobe) : अग्रमस्तिष्क के ठीक पीछे का प्रमस्तिष्कीय वल्कुट का भाग जो बोलने और मांसपेशी की गतियों और योजना बनाने तथा निर्णय करने के कार्यों को नियंत्रित करता है।

कुंठा (Frustration) : जब लक्ष्य की पूर्ति के लिए की जाने वाली क्रिया किसी तरह बाधित हो जाती है तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना होती है।

फ़्यूग अवस्था (Fugue state) : स्मृतिलोप के साथ वास्तविक भौतिक पलायन की स्थिति, व्यक्ति घंटों तक घूमता रह सकता है अथवा किसी दूसरे क्षेत्र में जा सकता है और एक नया जीवन शुरू कर सकता है।

प्रकार्यात्मक स्थिरता (Functional fixedness) : किसी भी चीज़ के बारे में केवल उनके सामान्य प्रकार्यों के संदर्भ में सोचना, जो समस्या समाधान के लिए एक बाधा होती है।

प्रकार्यवाद (Functionalism) : मनोविज्ञान की वह विचारधारा जो मानव मन अथवा चेतना के उपयोगितावादी, अनुकूलनपरक कार्यों पर बल देती है।

गैल्वनिक त्वक् अनुक्रिया (Galvanic skin response-GSR) : त्वचा की, विद्युतीय संवाहकता या क्रिया में होने वाले परिवर्तन जो एक संवेदनशील गैल्वनोमीटर के द्वारा पता लगाए जाते हैं।

लिंग (Gender) : पुरुष अथवा महिला होने का सामाजिक आयाम।

लिंग पहचान (Gender identity) : पुरुष या महिला होने की समझ, जो 3 वर्ष की उम्र होने तक बच्चों में आती है।

लिंग भूमिका (Gender role) : प्रत्याशाओं का एक समुच्चय जो यह निर्धारित करता है कि किस प्रकार महिलाओं और पुरुषों को विचार करना चाहिए, कार्य करना चाहिए और अनुभव करना चाहिए।

सामान्यीकरण (Generalisation) : ऐसी प्रवृत्ति जिसमें यदि कोई अनुक्रिया अनुबंधित हो गई हो तो ऐसा उद्दीपक जो अनुबंधित उद्दीपक के समान हो, समान अनुक्रियाएँ उत्पन्न करेगा।

जीन (Genes) : आनुवंशिक सूचना की इकाइयाँ, डी.एन.ए. निर्मित गुणसूत्र खंड। जीन अपने को पुनः उत्पादित करने के लिए और जीवन को बनाए रखने वाले प्रोटीन के उत्पादन के लिए कोशिका के लिए ब्लूप्रिंट का काम करता है।

गेस्टाल्ट (Gestalt) : एक संगठित समग्र पूर्ण, सूचनाओं के अंश को एक अर्थपूर्ण समग्र में संगठित करने की हमारी प्रवृत्ति जिस पर गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक ज़ोर देते हैं।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt psychology) : मनोविज्ञान की एक शाखा जिसमें व्यवहार को, इसके अपने भागों के कुल योग की अपेक्षा, अधिक व्यापक और एकीकृत साकल्य माना जाता है।

व्याकरण (Grammar) : नियमों का समुच्चय जो यह बताता है कि भाषा के तत्वों को किस प्रकार मिश्रित किया जाए, जिससे बोधगम्य वाक्य बन सके।

स्थूल पेशीय कौशल (Gross motor skills) : पेशीय कौशल जिसमें मांसपेशियों के व्यापक रूप से क्रियाकलाप की आवश्यकता होती है, जैसे- टहलना।

समूह परीक्षण (Group test) : एक परीक्षण, जो कई लोगों पर एक ही परीक्षणकर्ता द्वारा एक ही समय में किया जाए।

गोलार्द्ध (Hemispheres) : प्रमस्तिष्क और अनुमस्तिष्क के दो समरूप अर्द्धभाग।

गोलार्द्ध प्रभाविता (Hemispheric dominance) : एक गोलार्द्ध, सामान्यतः बाएँ गोलार्द्ध, द्वारा प्रमुख पेशीय और संज्ञानात्मक कार्यों का नियंत्रण।

आनुवंशिकता (Heredity) : माता-पिता से संतान को गुणों का जैविकीय संचरण।

आवश्यकताओं का पदानुक्रम (Hierarchy of needs) : मैस्लो का पिरामिड आवश्यकताओं को एक पदानुक्रम में प्रस्तुत करता है। अधिक मूल आवश्यकताएँ जैसे शारीरक्रियात्मक एवं सुरक्षा आवश्यकता सबसे नीचे, उसके ऊपर उच्चस्तरीय आवश्यकताएँ जैसे प्रेम एवं सम्मान तथा आत्मसिद्धि आवश्यकता सबसे ऊपर होती है। इस पदानुक्रम में ऊपर जाने के लिए व्यक्ति की मूल शरीरक्रियात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है।

समस्थिति (Homeostasis) : भोजन, जल, वायु, निद्रा और तापमान के परिप्रेक्ष्य में आंतरिक, दैहिक अवस्था में संतुलन को बनाए रखने की शरीरक्रियात्मक प्रवृत्ति।

प्राज्ञ मानव (Homo sapiens) : आधुनिक मानव प्राणी का वैज्ञानिक नाम।

हार्मोन या अंतःस्राव (Hormones) : ग्रंथियों द्वारा रक्त प्रवाह में स्रावित किए जाने वाले रासायनिक पदार्थ।

वर्ण (Hue) : रंग।

मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic psychology) : मनोविज्ञान का वह उपागम जो व्यक्ति, अथवा स्व और व्यक्तिगत संवृद्धि और विकास पर बल देता है।

अधश्चेतक (Hypothalamus) : थैलेमस के नीचे स्थित एक तंत्रिका संरचना। यह पानी पीने, शरीर के तापमान और रख-रखाव के क्रियाकलापों को निर्देशित करता है, पीयूष ग्रंथि में अंतःस्राव को नियंत्रित करता है और संवेगों तथा अभिप्रेरणा से संबंध रखता है।

परिकल्पना या प्राक्कल्पना (Hypothesis) : किसी शोध प्रश्न के उत्तर में दो परिवर्त्यों के बीच संबंध का एक अस्थायी कथन।

तदात्मीकरण/तादात्म्य (Identification) : किसी व्यक्ति द्वारा अपने 'स्व' को दूसरे व्यक्तियों के साथ संबद्ध करने और उनकी विशेषताओं या दृष्टिकोण को स्वीकार करने की प्रक्रिया।

पहचान बनाम भूमिका संभ्रम (Identity vs. role confusion) : इरिक्सन की विकासात्मक अवस्था जिसमें किशोर इस तरह के द्वंद्वों का सामना करते हैं कि वे कौन हैं, वे क्या हैं और जीवन में वे कहाँ जा रहे हैं।

प्रदीप्ति (Illumination) : सर्जनात्मक प्रक्रिया की एक अवस्था। विचार, समाधान और नए संबंध उभरते हैं और समस्या से संबंधित सारे तथ्य यथास्थान आ जाते हैं।

प्रासंगिक अधिगम (Incidental learning) : ऐसा अधिगम जो सुचिंतित, अथवा ऐच्छिक न हो और जो संभवतः अन्य असंबद्ध क्रियाकलाप के फलस्वरूप प्राप्त किया गया हो।

उद्‌भवन (Incubation) : सर्जनात्मक प्रक्रिया में एक अवस्था जिसमें सचेतन स्तर पर प्रगति प्रकट नहीं होती, जबकि अचेतन मन किसी विचार या समाधान पर कार्य कर सकता है।

अनाश्रित परिवर्त्य (Independent variable) : प्रयोगकर्ता द्वारा यह देखने के लिए कि प्रहस्तित घटना या स्थिति का किसी दूसरी घटना या स्थिति पर कोई पूर्वकथनीय प्रभाव होगा या नहीं।

वैयक्तिक परीक्षण (Individual test) : कोई परीक्षण जो एक समय में केवल एक व्यक्ति पर ही किया जा सके। स्टैनफोर्ड-बिने तथा वैशलर बुद्धि परीक्षण, वैयक्तिक परीक्षण के उदाहरण हैं।

आगमनात्मक तर्कना (Inductive reasoning) : वह तार्किक प्रक्रिया जिसके द्वारा विशेष घटनाओं से सामान्य सिद्धांतों तक पहुँचा जाता है।

शैशवावस्था (Infancy) : जन्म से लेकर 24 माह तक की विस्तृत विकासात्मक अवधि।

सूचना-प्रक्रमण उपागम (Information-processing approach) : एक उपागम जिसका इन बातों से संबंध है : व्यक्ति अपने जीवन-संसार के बारे में सूचनाएँ किस तरह प्रक्रमित करता है, किस प्रकार सूचनाएँ हमारे मन में प्रवेश करती हैं, किस प्रकार ये सूचनाएँ संचित की जाती हैं और रूपांतरित होती हैं, तथा किसी कार्य को करने, किसी समस्या का हल ढूँढ़ने और तर्कना के लिए इन्हें पुनः कैसे प्राप्त किया जाता है।

सुविज्ञ सहमति (Informed consent) : व्यक्ति या रोगी की प्रयोगात्मक अथवा चिकित्सीय प्रक्रिया की प्रकृति और संभावित खतरों की समझ के आधार पर उसके साथ अनुबंध।

उपक्रम बनाम ग्लानि (Initiative vs. guilt) : इरिक्सन की विकासात्मक अवस्था जिसमें विद्यालय जाना शुरू करने वाले बच्चे के सामने एक विस्तृत सामाजिक दुनिया होती है और उसके समक्ष यह चुनौती होती है कि क्रियाशील, प्रयोजनयुक्त व्यवहार विकसित करे ताकि इन चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें असफल होने से ग्लानि एवं शर्म की भावना विकसित होती है।

अंतर्दृष्टि (Insight) : नयी परिस्थितियों का प्रभावशाली ढंग से सामना कर सकने की योग्यता।

मूल प्रवृत्ति (Instinct) : एक जटिल सार्वभौम व्यवहार है जो एक प्रजाति के सभी सदस्यों में पाया जाता है और अधिगत नहीं होता है।

समग्रता बनाम भग्नाशा (Integrity vs. despair) : इरिक्सन की आठवीं तथा अंतिम विकासात्मक अवस्था जिसके दौरान व्यक्ति यह मूल्यांकन करने के लिए पीछे की ओर देखता है कि उसने अपने जीवन के साथ क्या किया। संतोष की अनुभूति समग्रता उत्पन्न करती है और असंतोष भग्नाशा उत्पन्न करता है।

अवरोध या व्यतिकरण (Interference) : अधिगम के सिद्धांत में, सीखने से पहले या सीखने के बाद या सीखने की क्रिया के दौरान, अधिगमकर्ता के वे क्रियाकलाप सीखे जाने वाली सामग्री में अवरोध पैदा करते हैं, जिनसे विस्मरण होता है।

अंतःस्थिति या आच्छादन (Interposition) : गहनता प्रत्यक्षण का एक संकेत जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि यदि एक वस्तु दूसरी को आच्छादित करती प्रतीत हो तो वह निकटतर होगी।

साक्षात्कार (Interview) : सूचना प्राप्त करने, निदान ढूँढ़ने, अंतर्वैयक्तिक व्यवहार और व्यक्तित्व के गुणों का मूल्यांकन करने अथवा व्यक्ति को परामर्श देने के लिए आमने-सामने का संवाद।

अंतर्भूत अभिप्रेरणा (Intrinsic motivation) : स्वयं अपने लिए किसी व्यवहार का प्रवर्तन करने और प्रभावशाली होने की अंतर्भूत इच्छा।

अंतर्निरीक्षण (Introspection) : अपने सचेतन अनुभवों और अनुभूतियों के अंदर देखने की प्रक्रिया।

जेम्स-लैंगे सिद्धांत (James-Lange theory) : संवेग का सिद्धांत, जिसके अनुसार किसी उद्दीपक के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया संवेगात्मक प्रत्यक्षण पैदा करती है; संवेग का यह स्पष्ट अनुभव शारीरिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप होता है।

निर्णय (Judgement) : उपलब्ध सामग्री के आधार पर मत-निर्माण करने, निष्कर्ष पर पहुँचने और मूल्यांकन करने की प्रक्रिया; मूल्यांकन की प्रक्रिया का उत्पाद।

किशोर अपराध-वृत्ति (Juvenile delinquency) : विविध प्रकार के किशोर व्यवहार जिसमें सामाजिक रूप से अस्वीकार्य व्यवहार से लेकर प्रतिष्ठा से संबंधित दोष (जैसे- भाग जाना)से लेकर आपराधिक दोष (जैसे- चोरी) सम्मिलित हैं।

भाषा (Language) : प्रतीकों का एक व्यवस्थित समुच्चय जो अर्थ प्रदान करता है तथा इन प्रतीकों को जोड़ने के कुछ नियम, जिनका उपयोग असंख्य प्रकार के संदेश उत्पन्न करने में किया जाता है।

निकटता का नियम (Law of proximity) : समूहीकरण नियम जो यह बताता है कि निकटतम उद्दीपक एक साथ समूहीकृत होते हैं।

समानता का नियम (Law of similarity) : समूहीकरण नियम जो यह बताता है कि समान उद्दीपक एक साथ समूहीकृत होते हैं।

अधिगम अशक्तताएँ (Learning disabilities) : सीखने की अशक्तता वाले बच्चे (i) सामान्य या सामान्य से अधिक बुद्धि वाले होते हैं, (ii) कई शैक्षिक क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते हैं किन्तु अन्य दूसरे क्षेत्रों

में कोई कमी नहीं प्रदर्शित करते, तथा (iii) किन्हीं अन्य दशाओं या विकारों से ग्रस्त नहीं होते जो उनकी सीखने की समस्याओं की व्याख्या कर सकें।

अधिगम (Learning) : अनुभव के कारण प्राणी के व्यवहार में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन।

असत्य संसूचक (Lie detector) : एक उपकरण जिसका उपयोग इस विचार पर आधारित है कि झूठ बोलने के साथ प्रायः भय अथवा उत्तेजना के आंतरांगी घटक भी साथ होते हैं; जब किसी व्यक्ति के उत्तर सांवेगिक उत्तेजना के साथ होते हैं तो यह उपकरण उसे इंगित कर देता है।

प्रकाश अनुकूलन (Light adaptation) : प्रकाश (दीप्ति) में परिवर्तनों के साथ शलाकाओं और शंकुओं का समायोजन।

उपवल्कुटीय तंत्र (Limbic system) : मस्तिष्क तंत्र जो अभिप्रेरित व्यवहार, संवेगात्मक स्थितियों और स्मृति के कुछ प्रकारों को प्रक्रमित करता है।

रेखीय परिप्रेक्ष्य (Linear perspective) : दूरी का प्रत्यक्षण करने के लिए एक एकनेत्री संकेत; जिसे हम समांतर रेखाओं के रूप में जानते हैं, उनकी अभिबिंदुता का हम प्रत्यक्षण करते हैं जो कि बढ़ती हुई दूरी को बताता है।

तीव्रता (Loudness) : ध्वनि तरंगों के आयाम का प्रत्यक्षण।

अनुरक्षण पूर्वाभ्यास (Maintenance rehearsal) : किसी सूचना का सक्रियता से दुहराया जाना जो उसके अभिगमन को बढ़ा सके।

परिपक्वता (Maturation) : परिवर्तनों की क्रमबद्ध शृंखला जो प्रत्येक व्यक्ति के आनुवंशिक 'ब्लूप्रिंट' (रूपरेखा) से निर्धारित होती है।

मेडुला (Medulla) : मस्तिष्क स्तंभ का आधार; यह दिल की धड़कन और साँस लेने, टहलने, सोने को नियंत्रित करता है; मस्तिष्क और शरीर को जोड़ने वाले तंत्रिका तंतु मध्यांश पर एक-दूसरे को पार करते हैं।

मीम्स (Memes) : मानव समाज के डी.एन.ए. होते हैं जो मन, व्यवहार और संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करते हैं।

मासिक धर्म प्रारंभ (Menarche): मासिक धर्म का प्रथम बार घटित होना।

मानस चित्रण (Mental representation): किसी उद्दीपक या उद्दीपकों के वर्ग का मानसिक प्रतिरूप होना।

मानसिक विन्यास (Mental set): किसी नयी समस्या/स्थिति के लिए पूर्व प्रयुक्त पद्धति से अनुक्रिया करने की प्रवृत्ति।

अधिसंज्ञान (Metacognition) : अपनी मानसिक प्रक्रियाओं का ज्ञान और समझ।

मन (Mind) : मन एक संप्रत्यय है जो व्यक्ति की संवेदनाओं, प्रत्यक्षणों, स्मृतियों, विचारों, सपनों, अभिप्रेरणाओं और संवेगात्मक अनुभूतियों के अनूठे समुच्चय से संबंधित है।

स्मृति-सहायक संकेत (Mnemonics) : वे युक्तियाँ या तकनीकें जो नयी सूचनाओं के भंडारण में परिचित साहचर्यों का उपयोग करती हैं ताकि उन्हें सहजता से याद रखा जा सके।

मॉडलिंग (Modeling) : सामाजिक अधिगम में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चा दूसरों का प्रेक्षण तथा अनुकरण करके सामाजिक एवं संज्ञानात्मक व्यवहार सीखता है।

एकनेत्री संकेत (Monocular cues) : केवल एक आँख से प्राप्त दृष्टि संकेत।

नैतिक विकास (Moral development) : ऐसे नियमों और परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में विकास कि एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों के साथ परस्पर किस तरह का व्यवहार करना चाहिए।

रूपिम (Morphemes): किसी भाषा में सबसे छोटी अर्थपूर्ण इकाई।

अभिप्रेरणा (Motivation) : एक आवश्यकता अथवा इच्छा जो व्यवहार को शक्ति देती है और उसे निर्देशित करती है।

अभिप्रेरक (Motives) : व्यवहार को शक्ति देने वाले और निर्देशित करने वाले कारक।

पेशीय या गत्यात्मक विकास (Motor development) : शारीरिक क्रियाओं के लिए आवश्यक मांसपेशियों के समन्वयन की प्रगति।

प्रेरक तंत्रिका कोशिका (Motor neurons) : तंत्रिका कोशिकाएँ जो आवेगों को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से मांसपेशियों और ग्रंथियों की ओर ले जाती हैं।

प्राकृतिक वरण या चयन (Natural selection) : जीव विकासवादी प्रक्रिया जो किसी प्रजाति के उन व्यक्तियों का पक्ष लेती है जो जीवित रहने और पुनरुत्पादन के लिए सबसे अधिक अनुकूलित होते हैं।

आवश्यकता (Need) : शरीरक्रियात्मक (आंतरिक) अथवा पर्यावरणी (बाह्य) संबंधी असंतुलन जो किसी अंतर्नोद को जन्म देता है।

ऋणात्मक सहसंबंध (Negative correlation) : दो परिवर्त्यों के मध्य संबंध जिसमें एक परिवर्त्य जैसे ऊपर की ओर जाता है, दूसरा परिवर्त्य नीचे आ जाता है।

निषेधात्मक प्रबलक (Negative reinforcer) : एक अप्रिय उद्दीपक जिसको हटा देने से उसके बाद घटित होने वाली अनुक्रिया के भविष्य में घटने की संभावना बढ़ जाती है।

तंत्रिका आवेग (Nerve impulse) : यह तंत्रिका संवेदन का, तंत्रिका में संवहन के विद्युत-रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से, एक स्थान से दूसरे स्थान में गमन है।

तंत्रिका तंत्र (Nervous system) : तंत्रिका कोशिकाओं का व्यापक नेटवर्क जो मस्तिष्क को तथा मस्तिष्क से शरीर के अन्य भागों को संदेश प्रेषित करता है।

तंत्रिका मनोविज्ञान (Neuropsychology) : यह मस्तिष्क क्रिया एवं तंत्रिका तंत्र के प्रकार्य के रूप में व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।

तंत्रिका कोशिका (Neuron) : तंत्रिका कोशिका जो सूचना ग्रहण करने, प्रक्रमित करने और उसे दूसरी कोशिकाओं को प्रेषित करने के लिए विशेषीकृत होती है।

तंत्रिकातापी विकार (Neurotic disorder) : एक मनोवैज्ञानिक विकार जो सामान्यत: दुखद होता है लेकिन इसमें व्यक्ति तार्किक ढंग से सोच पाता है और सामाजिक रूप से व्यवहार कर पाता है। फ्रायड ने तंत्रिकातापी विकारों को दुश्चिंता से मुक्त होने के उपायों के रूप में देखा है।

तंत्रिका-संचारक या न्यूरोट्रांसमीटर (Neurotransmitters) : रासायनिक संदेशवाहक जो मस्तिष्क से और मस्तिष्क को संदेश प्रेषित करते हैं।

मानक (Norm) : एक बड़े समूह के मापन के आधार पर प्राप्त मूल्य जिनका उपयोग मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्राप्तांकों की व्याख्या के लिए किया जाता है; सामाजिक मनोविज्ञान में स्वीकृत व्यवहारों के लिए समूह मानक।

केंद्रक (Nucleus) : केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में एक गुच्छिका अथवा तंत्रिका कोशिकाओं का पिण्ड।

शून्य परिकल्पना (Null hypothesis) : एक भविष्य कथन कि किसी प्रयोग में स्थितियों के मध्य कोई अंतर नहीं होगा अथवा परिवर्त्यों के मध्य कोई संबंध नहीं होगा।

वस्तु स्थायित्व (Object permanence) : यह समझ कि वस्तु और घटनाएँ तब भी अस्तित्ववान होती हैं जब वे प्रत्यक्ष रूप से दिखाई-सुनाई नहीं पड़तीं और न ही स्पर्श के अनुभव में आती हैं।

प्रेक्षण (Observation) : किसी वस्तु या घटना की साभिप्राय जाँच एवं उसका अभिलेखन, ताकि उसके बारे में तथ्य प्राप्त किए जा सकें अथवा जो भी देखा गया उसके बारे में व्यक्ति का अपना निष्कर्ष।

क्रियाप्रसूत अनुबंधन (Operant conditioning) : ऐसा अधिगम जिसमें ऐच्छिक अनुक्रियाएँ उनके परिणामों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

संक्रियावाद (Operationism) : यह दृष्टिकोण कि किसी संप्रत्यय का अर्थ और उसकी वैधता उन कार्य प्रणालियों पर निर्भर करती है जो इसे परिभाषित करने या इसे स्थापित करने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

संक्रियाएँ (Operations) : क्रियाओं का वह आत्मीकृत रूप जो बालक को भौतिक रूप से घटित घटनाओं को मानसिक रूप से करने में सहायता करता है।

कोर्ती अंग (Organ of corti) : आधार झिल्ली की सतह पर स्थित संरचना जिसमें सुनने के ग्राहक होते हैं।

अग्न्याशय (Pancreas) : एक महत्वपूर्ण ग्रंथि जो कि हार्मोन स्रावित करती है तथा पाचन क्रिया और उपापचयन की क्रिया से संबद्ध है। इससे निकलने वाले स्रावों में इन्सुलिन एक है।

प्रतिमान (Paradigm) : घटनाओं के एक समुच्चय को देखने या अध्ययन करने का एक तरीका।

परानुकंपी भाग (Parasympathetic division) : स्वायत्त तंत्रिका तंत्र का भाग जो शरीर की आंतरिक प्रक्रियाओं के दिन-प्रतिदिन के कार्य को मॉनीटर करता है, अनुकंपी उत्तेजना के बाद इसे शांत प्रकार्य की ओर लौटाता है।

समकक्षी (Peers) : एक ही उम्र अथवा परिपक्वता स्तर के बालक।

प्रत्यक्षण (Perception) : वे प्रक्रियाएँ जो संवेदी सूचना को संगठित करती हैं और इसको पर्यावरणी स्रोत के रूप में परिभाषित करती हैं।

प्रात्यक्षिक स्थैर्य (Perceptual constancy) : संवेदी क्रिया के विभिन्न प्रतिमानों से संसार के बारे में समान निष्कर्ष निकाल पाने की योग्यता (यथा, कोई व्यक्ति विभिन्न कोणों से देखे जाने पर भी उसी व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है)।

निष्पादन परीक्षण (Performance tests) : ऐसे परीक्षण जिनमें भाषा की आवश्यकता नहीं पड़ती।

दृश्य प्ररूप या समलक्षणी (Phenotype) : प्रेक्षणीय नाक-नक्शा जिसके द्वारा व्यक्तियों को पहचाना जाता है।

फ़ाई घटना (Phi phenomenon) : गति संबंधी एक भ्रम जो चाक्षुष उद्दीपक को एक के बाद एक तीव्र गति से प्रस्तुत करने से उत्पन्न होता है।

स्वनिम (Phonemes) : किसी भाषा में ध्वनि की सबसे छोटी इकाई।

प्रकाश संग्राहक (Photoreceptor) : दृष्टि-अभिग्राहक; शलाका और शंकु कोशिकाएँ।

शरीरक्रिया मनोविज्ञान (Physiological psychology) : मानव और पशु व्यवहार का एक वैज्ञानिक अध्ययन जो शारीरिक प्रक्रियाओं के संबंध पर आधारित होता है; यथा-तंत्रिका तंत्र, हार्मोन, संवेदी अंग और व्यवहार-संबंधी गोचर।

तारत्व (Pitch) : ध्वनि की आवृत्ति की प्रत्यक्षपरक व्याख्या।

पीयूष ग्रंथि (Pituitary gland) : वह ग्रंथि जो ऐसे हार्मोन स्रावित करती है जो दूसरी अंत:स्रावी ग्रंथियों के स्रावों को नियमित करते हैं, साथ ही एक हार्मोन को स्रावित करती है जो संवृद्धि को प्रभावित करता है।

सेतु या पोन्स (Pons) : मस्तिष्क का वह भाग जो स्वप्न देखने और नींद से जागने की क्रिया से संबद्ध होता है।

धनात्मक प्रबलन (Positive reinforcement) : कोई उद्दीपक अथवा घटना, जब इसके प्रारंभ को एक विशेष अनुक्रिया पर निर्भर बनाया जाता है, तो वह उस अनुक्रिया के घटित होने की संभावना में वृद्धि करती है।

शक्ति अभिप्रेरक (Power motive) : नियंत्रण करने, पद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने और दूसरों को प्रभावित करने की इच्छा।

पूर्वकथन या भविष्यकथन (Prediction) : पूर्ववर्ती परिवर्त्यों और अनुवर्ती घटनाओं के मध्य संबंध का वर्णन करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया। भविष्यकथन समय में आगे की ओर क्रियाशील होता है जो पूर्ववर्ती परिवर्त्यों के मापन से शुरू होता है और तत्पश्चात् अनुवर्ती घटनाओं के मापन का पूर्वानुमान किया जाता है।

प्रसवपूर्व अवधि (Prenatal period) : गर्भधारण से जन्म तक का समय।

पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational stage) : पियाजे का दूसरा चरण जिसमें बच्चे संसार को शब्दों, प्रतिमाओं और रेखांकन से प्रस्तुत करते हैं किंतु तार्किक रूप से संक्रिया नहीं कर सकते।

मूल रंग (Primary colours) : तीन रंगों का समुच्चय, अर्थात लाल, हरा और नीला; असमान मात्रा में मिलाए जाने पर कोई भी रंग उत्पन्न कर सकता है।

मूल लैंगिक लक्षण (Primary sex characteristics) : प्रजनन के लिए आवश्यक लैंगिक संरचना।

समस्या समाधान (Problem solving) : चिंतन के उच्चतर स्तर पर घटित होने वाला व्यवहार; समस्या समाधान को चार चरणों में विभाजित किया जाता है: उद्भवन, प्रबोधन, तैयारी और सत्यापन।

निकटता सिद्धांत (Proximity principle) : गेस्टाल्ट सिद्धांत, जिसके अनुसार वस्तु या उद्दीपक जो निकट हैं, उन्हें एक इकाई के रूप में देखा जाता है। इसे निकटता का नियम भी कहते हैं।

समीप-दूराभिमुख प्रवृत्ति (Proximodistal trend) : केंद्र से बाहर की दिशा का पेशीय विकास।

मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) : मनोचिकित्सा की एक विधि जिसमें मनोचिकित्सक दमित अचेतन सामग्री को सचेतन स्तर पर लाने का प्रयास करता है।

मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक (Psychological motives) : वैयक्तिक एवं अंतर्वैयक्तिक अभिप्रेरक जो शक्ति, आत्म-सम्मान, संबंधन और दूसरे लोगों से घनिष्ठता बढ़ाने के लिए व्यक्तियों को प्रेरित करता है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological test) : व्यक्ति के व्यवहार के प्रतिदर्श को मापन करने का एक मानकीकृत तरीका।

मनोभौतिकी (Psychophysics) : मानसिक प्रक्रियाओं एवं भौतिक जगत के बीच संबंध का अध्ययन।

यौवनारंभ (Puberty) : तीव्र रूप से घटित होने वाली कंकालीय एवं लैंगिक परिपक्वता जो मुख्यत: किशोरावस्था में घटित होती है।

दंड (Punishment) : व्यवहार के दमन के लिए एक अप्रिय अथवा हानिकर उद्दीपक का अनुप्रयोग।

यादृच्छिकीकरण (Randomisation) : एक प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी परिवर्त्य को पक्षपातरहित ढंग से चुना जाता है या उसे किसी दशा में रखा जाता है। यादृच्छिकीकरण में यादृच्छिक संख्याओं की तालिका का उपयोग किया जाता है ताकि कोई अनुमेय क्रम स्थापित न किया जा सके ।

तर्कना (Reasoning) : यथार्थवादी चिंतन प्रक्रिया जो तथ्यों के एक समुच्चय (सेट) से निष्कर्ष निकालती है।

प्रतिवर्त चाप (Reflex arc) : एक ग्राहक तंत्रिका कोशिका तथा एक अपवाही तंत्रिका कोशिका जो उद्दीपक-अनुक्रिया क्रम के बीच मध्यस्थता कर सकती है।

प्रबलन (Reinforcement) : एक अनुक्रिया का अनुसरण करती घटना जो अनुक्रिया के घटित होने की प्रवृत्ति को शक्ति देती है।

विश्वसनीयता (Reliability) : किसी मापन तकनीक की स्थिरता के परिमाण के बारे में एक कथन। विश्वसनीय तकनीक से समान स्थितियों के अंतर्गत बार-बार मापन से समान माप प्राप्त होते हैं।

रेटिक्युलर एक्टिवेटिंग सिस्टम (Reticular activating system) : तंतुओं का एक संजाल जो मेरुरज्जु से शुरू होता है और मध्य मस्तिष्क से होता हुआ उच्चतर केंद्रों में जाता है। इसकी भूमिका अवधान और उद्वेलन में होती है।

दृष्टिपटल या रेटिना (Retina) : आँख के पीछे की ओर कोशिका की परत जिनमें प्रकाश संग्राहक स्थित होते हैं।

पुनरुद्धार संकेत (Retrieval cues) : उपलब्ध आंतरिक अथवा बाह्य उद्दीपक जो स्मृति भंडार से सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायता करते हैं।

पूर्वलक्षी अवरोध (Retroactive interference) : एक स्मृति प्रक्रिया जिसमें नयी सीखी गई जानकारियाँ पूर्वभंडारित समान सामग्री की पुन:प्राप्ति रोकती हैं।

दंड या शलाका (Rods) : विशिष्ट चाक्षुष संग्राहक जो रात की दृष्टि और परिधीय दृष्टि में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

समाकृति या स्कीमा (Schema) : एक संज्ञानात्मक संरचना; संयोजनों का एक संजाल जो किसी व्यक्ति के प्रत्यक्षण को संगठित और निर्देशित करता है।

स्क्रिप्ट (Script) : प्रक्रियात्मक ज्ञान की स्मृति-प्रस्तुति (यथा-एक रेस्तराँ में भोजन करना)।

गौण लैंगिक लक्षण (Secondary sex characteristics) : शारीरिक गुण जो लिंग से संबंधित हैं किंतु प्रजनन में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होते।

चयनात्मक अवधान (Selective attention) : किसी विशेष उद्दीपक पर सचेतन रूप से अभिज्ञता केंद्रित करना।

आत्म या स्व (Self) : व्यक्ति का स्वयं या अपने शरीर, योग्यताओं, व्यक्तित्व विशेषकों और चीज़ों को करने की विधि के प्रति प्रत्यक्षण या जागरूकता।

आत्मसिद्धि (Self-actualisation) : यह स्व-पूर्ति की एक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी उच्चतम क्षमताओं को विशिष्ट प्रकार से अनुभव करते हैं।

आत्म-सम्मान (Self-esteem) : आत्म या स्व का व्यापक मूल्यांकन आयाम।

आर्थी स्मृति (Semantic memory) : दीर्घकालिक स्मृति का घटक जो शब्दों और संप्रत्ययों के मूलभूत अर्थों का संग्रह करता है।

संवेदना (Sensation) : किसी भौतिक उद्दीपन की अनुभूति।

संवेदी प्रेरक अवस्था (Sensorimotor stage) : पियाजे का पहला चरण जिसमें नवजात शिशु शारीरिक और पेशीय क्रियाओं के साथ संवेदी अनुभवों का संयोजन कर संसार की एक समझ विकसित करता है।

संवेदी अनुकूलन (Sensory adaptation) : उद्दीपन के अपरिवर्तित रहने के पश्चात संग्राहक कोशिकाओं में अनुक्रियाशीलता की क्षति।

संवेदी स्मृति (Sensory memory) : प्रारंभिक प्रक्रिया जो उद्दीपक के संक्षिप्त प्रभावों को संरक्षित रखती है, इसे संवेदी पंजिका भी कहा जाता है।

संवेदी तंत्रिका कोशिका (Sensory neurons) : इन्हें अभिवाही तंत्रिका कोशिका भी कहते हैं। ये संवेदी ग्राहक कोशिकाओं से संदेशों को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र तक ले जाती हैं।

क्रमिक अधिगम (Serial learning) : अनुक्रियाओं की एक शृंखला को उनकी प्रस्तुति के सुनिश्चित क्रम में सीखना।

यौन हार्मोन (Sex hormones) : जनन प्रकार्यों और गौण यौन लक्षणों के निर्धारण के लिए जननग्रंथियों द्वारा स्रावित पदार्थ, यथा–स्त्री में एस्ट्रोजन और पुरुष में टेस्टोस्ट्रोन।

आकृति स्थैर्य (Shape constancy) : इसमें ज्ञान कि किसी वस्तु को भिन्न कोण से देखे जाने पर भी उसका रूप स्थिर रहता है।

समानता (Similarity) : गेस्टाल्ट सिद्धांत, जिसके अनुसार वस्तु या उद्दीपक जो आकृति, आकार, अथवा तीव्रता आदि में समान होते हैं, एक इकाई के रूप में देखे जाते हैं।

आकार स्थैर्य (Size constancy) : परिचित वस्तुओं को उसी आकार में देखने की प्रवृत्ति जबकि वस्तु की रेटिना पर पड़ने वाली प्रतिमा भिन्न–भिन्न होती है।

कंकालीय पेशियाँ (Skeletal muscles) : अस्थियों से जुड़ी हुई मांसपेशियाँ, जिनके कारण विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतियाँ संभव होती हैं, जैसे कि अंगों की गति।

समाजीकरण (Socialisation) : सामाजिक अधिगम की क्रिया जिसके द्वारा एक बच्चा उन आदर्शों, अभिवृत्तियों, विश्वासों और व्यवहारों को ग्रहण करता है जो उसकी संस्कृति में स्वीकार्य हैं; परिवार, विद्यालय और समसमूह समाजीकरण के मुख्य कारक (एजेंट) हैं।

समाज जैविकी (Sociobiology) : सामाजिक व्यवहार के जैविक आधार का व्यवस्थित अध्ययन।

समाजशास्त्र (Sociology) : समूहों में लोगों का अध्ययन; व्यक्ति की जगह समूह अध्ययन की इकाई है।

काय (Soma) : सभी प्रकार की काय कोशिका अथवा सामान्य रूप से मनुष्यों एवं अन्य पशुओं जैसा किसी भी तरह का शरीर–रूप।

कायिक तंत्रिका तंत्र (Somatic nervous system) : परिधीय तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो ऐच्छिक पेशियों को नियंत्रित करता है।

प्रजाति (Species) : विभिन्न जीवित प्राणियों का जैविक वर्गीकरण।

स्वतः पुनःप्राप्ति (Spontaneous recovery) : प्राचीन अनुबंधन में एक समाप्त हुई अनुबंधित अनुक्रिया का एक विश्राम अवधि के बाद पुनः प्रकटीकरण।

मानकीकरण (Standardisation) : प्रतिनिधि व्यक्तियों के एक बड़े समूह पर लागू करने के बाद किसी परीक्षण के लिए मानक तथा समान प्रणाली स्थापित करने की विधि।

उद्दीपक (Stimulus) : पर्यावरण में स्थित कोई सुपरिभाषित तत्व जो प्राणी को प्रभावित करता हो तथा जो प्रकट अथवा अप्रकट अनुक्रिया को जन्म देता हो।

संरचनावाद (Structuralism) : विल्हेम वुंट के साथ संबद्ध मनोविज्ञान का वह उपागम जो चेतना की संरचना और उसकी संक्रिया को अथवा मानव मन को समझना चाहता है।

सर्वेक्षण (Survey) : किसी दी हुई जनसंख्या में प्रदत्त प्राप्त करने के लिए लिखित प्रश्नावली अथवा वैयक्तिक साक्षात्कार का उपयोग करने वाली अनुसंधान विधि।

अनुकंपी तंत्रिका तंत्र (Sympathetic nervous system) : स्वायत्त तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो शरीर को सचेत करता है, तथा दबावमय स्थितियों में इसकी ऊर्जा को गतिशील बनाता है।

तंत्रिका–कोष संधि (Synapse) : प्रेषित करने वाली तंत्रिका कोशिका के अक्षतंतु के अग्रभाग और प्राप्त करने वाली तंत्रिका कोशिका के पार्श्वतंतु अथवा काय कोशिका के मध्य का संधिस्थल। इस संधि स्थान के छोटे से अंतराल को संधिस्थलीय खंड कहा जाता है।

संधिस्थलीय पुटिका (Synaptic vesicle) : संधिस्थल की घुंडियों में पाई जाने वाली संरचनाएँ जो संधिस्थलीय खंड में तंत्रिका–संचारक के मुक्त होने से पहले उन्हें संचित करती हैं।

वाक्यविन्यास (Syntax) : स्वीकार्य वाक्यांश या वाक्य बनाने के लिए शब्दों को संयोजित करने के नियमों से संबंधित।

स्वभाव (Temperament) : किसी व्यक्ति की व्यवहार शैली और अनुक्रिया करने का विशिष्ट तरीका।

शंख पालि (Temporal lobe) : प्रमस्तिष्कीय वल्कुट का वह भाग जो कानों के ऊपर पड़ा रहता है; इसके अंतर्गत श्रवण क्षेत्र भी शामिल है, इनमें से प्रत्येक श्रवण सूचनाएँ प्राथमिक रूप से सामने के कान से प्राप्त करता है।

रचनागुण प्रवणता (Texture gradient) : दूरी का एक संकेत जो इस बात पर आधारित है कि वस्तुएँ जितनी अधिक दूर होती हैं वे अपने लक्षणों और विवरणों को खो बैठती हैं।

चेतक या थैलेमस (Thalamus) : मस्तिष्क का संवेदी स्विचबोर्ड जो मस्तिष्क स्तंभ के ऊपर स्थित है; यह संदेशों को वल्कुट में संवेदी ग्रहण क्षेत्रों में भेजता है और जवाबों को अनुमस्तिष्क और मेडुला में प्रेषित करता है।

चिंतन (Thinking) : पर्यावरण से प्राप्त सूचनाओं और दीर्घकालिक स्मृति में संचित प्रतीकों, दोनों की मानसिक अथवा संज्ञानात्मक पुनर्व्यवस्था या प्रहस्तन। भाषा, प्रतीकों, संप्रत्ययों और प्रतिमाओं का उपयोग होता है तथा उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच चिंतन घटित होता है या मध्यस्थता करता है।

ध्वनिगुण (Timbre) : अधिस्वर के सम्मिलन द्वारा उत्पन्न स्वर की विशिष्ट गुणवत्ता जो शुद्ध स्वर के साथ सुनी जाती है।

अधोगामी प्रक्रमण (Top-down processing): आकार प्रत्यक्षण में पूर्ण से अंशों की ओर क्रमिक प्रगति।

चिह्न के धूमिल पड़ने का सिद्धांत (Trace decay theory) : यह विचार कि सीखी हुई सामग्री मस्तिष्क में संकेत या प्रभाव के रूप में होती है और अगर उसका अभ्यास और उपयोग न किया जाए तो यह लुप्त हो जाती है।

अधिगम अंतरण (Transfer of learning) : किसी भिन्न स्थिति में पहले के सीखने के कारण एक नयी स्थिति में अधिक त्वरित रूप से सीखना (सकारात्मक अंतरण) अथवा पहले के सीखने के कारण एक नयी स्थिति में धीरे-धीरे सीखना (निषेधात्मक अंतरण)।

अभिघातज अनुभव (Traumatic experience) : शारीरिक या मनोवैज्ञानिक चोट; मनोवैज्ञानिक अभिघात में संवेगात्मक सदमे आते हैं जिनका व्यक्तित्व पर कमोवेश स्थायी प्रभाव होता है, जैसे कि अस्वीकृति, संबंध-विच्छेद, लड़ाई का अनुभव, विध्वंस आदि।

विश्वास बनाम अविश्वास (Trust vs. mistrust) : इरिक्सन की पहली मनोसामाजिक अवस्था; विश्वास के विकास के लिए शारीरिक सुख और भविष्य के प्रति भय और चिंता की एक न्यूनतम मात्रा का अनुभव आवश्यक है।

अननुबंधित अनुक्रिया (Unconditioned response) : किसी अननुबंधित उद्दीपक के प्रति बगैर सीखी हुई या अनैच्छिक अनुक्रिया।

अननुबंधित उद्दीपक (Unconditioned stimulus) : एक उद्दीपक जो सामान्यत: एक अनैच्छिक, मापनयोग्य अनुक्रिया उत्पन्न करता है।

परोक्ष मापक (Unobtrusive measures) : प्रेक्षण और मापन की प्रक्रियाएँ जिनका चयन इस तरह किया गया हो कि वे सामान्य व्यवहार में हस्तक्षेप न करें अथवा व्यक्ति की सचेतन जागरूकता में दाखिल न हों।

वैधता (Validity) : किसी मापक द्वारा की गई परिशुद्धता का द्योतक जो यह बताता है कि मापन वास्तविकता के निकट है।

परिवर्त्य या चर (Variable) : कोई भी मापनयोग्य दशा, घटना, लक्षण या व्यवहार जिसका अध्ययन में नियंत्रण या प्रेक्षण किया जाता है।

वाचिक अधिगम (Verbal learning) : वाचिक उद्दीपक के प्रति वाचिक रूप से अनुक्रिया करने की अधिगम की प्रक्रिया। इसमें प्रतीक, निरर्थक पद, शब्दों की सूचियाँ आदि होते हैं।

शाब्दिक परीक्षण (Verbal test) : ऐसे परीक्षण जिनमें अपेक्षित अनुक्रियाओं को करने में व्यक्ति की शब्दों एवं संप्रत्ययों को समझने तथा उसका उपयोग करने की योग्यता महत्वपूर्ण होती है।

चाक्षुष भ्रम (Visual illusions) : भौतिक उद्दीपक जो प्रत्यक्षण में लगातार त्रुटि उत्पन्न करते हैं।

तरंगदैर्ध्य (Wavelength) : प्रकाश या ध्वनि तरंग के एक शिखर से दूसरे के शिखर की दूरी।

शब्द साहचर्य (Word associations) : व्यक्तित्व मूल्यांकन तकनीक, जिसमें आम शब्दों द्वारा प्रभावित होकर व्यक्ति अनुक्रियाएँ करता है।

कार्यकारी स्मृति (Working memory) : स्मृति की प्रक्रिया जो प्रत्यक्षण की गई नवीन घटनाओं और अनुभवों को परिरक्षित रखती है, इसे अल्पकालिक स्मृति भी कहा जाता है।

पठनीय पुस्तकें

विषयवस्तु की और अधिक जानकारी के लिए, आप निम्नलिखित पुस्तकों को पढ़ सकते हैं :

- **बैरन, आर.ए.** (2001/भारतीय पुनर्मुद्रण 2002), *साइकोलॉजी* (पाँचवाँ संस्करण), एलिन एंड बेकॅन।
- **दास, जे.पी.** (1998), द *वर्किंग माइंड : एन इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी*, सेज पब्लिकेशंस।
- **डेविस, एस.एफ.** तथा **पलाडिनो, जे.एच.** (1997), *साइकोलॉजी*, प्रेंटिस हॉल।
- **जेरो, जे.आर.** (1997), *साइकोलॉजी : एन इंट्रोडक्शन*, एडिसन वेस्ली लांगमैन।
- **ग्लाइटमैन, एच.** (1996), *बेसिक साइकोलॉजी*, डब्ल्यू.डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी।
- **खांडवाला, पी.एन.** (1984), *फोर्थ आई : एक्सेलेंस थ्रू क्रिएटिविटी*, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी।
- **मैलिम, टी.** तथा **बर्च, ए.** (1998), *इंट्रोडक्टरी साइकोलॉजी*, मैकमिलन प्रेस लिमिटेड।
- **मॉर्गन, सी.टी., किंग, आर.ए., विज़, जे.आर.** तथा **शॉपलर, जे.** (1986), *इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी* (सातवाँ संस्करण), मैकग्रा-हिल बुक कंपनी।
- **विटेन, डब्ल्यू.** (2001), *साइकोलॉजी : थीम्स एंड वेरिएशंस*, वैडसवर्थ।
- **जिंबार्डो, पी.जी.** तथा **वेबर, ए.एल.** (1997), *साइकोलॉजी*, न्यूयार्क : लांगमैन।
- **जिंबार्डो, पी.जी.** (1985), *साइकोलॉजी एंड लाइफ*, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स।

स्रोत पुस्तकें

- **दास, यू.एन., मोहंती, पी.के, मोहंती, एस.सी., पटनायक, एल.के., नंदा, जी.के., मिश्र, जी.** तथा **कर, सी.** (2004), *साइकोलॉजी – पार्ट I*, उड़ीसा स्टेट ब्यूरो ऑफ टेक्स्टबुक प्रिपरेशन एंड प्रोडक्शन, पुस्तक भवन, भुवनेश्वर।
- **ग्लाइटमैन, एच., फ्रिडलुड, ए.जे.** तथा **रिसबर्ग, डी.** (2004), *बेसिक साइकोलॉजी* (पाँचवाँ संस्करण), डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी।
- **मंडल, एम.के.** (2004), *इमोशन : बेसिक इशूज़ एंड करेंट ट्रेंड्स*, एफिलिएटेड इस्ट-वेस्ट प्रेस।
- **सैंट्रॉक, जे.डब्ल्यू.** (1999), *लाइफ-स्पैन डेवलपमेंट* (सातवाँ संस्करण), बॉस्टन : मैकग्रा-हिल कॉलेज।